225hi09

9

समकालीन भारतीय कला

मुगल साम्राज्य के पतन तथा प्राचीन एवं मध्ययुगीन कला की समाप्ति के बाद भारत में ब्रिटिश राज के साथ समकालीन भारतीय कला प्रारम्भ हुई। **राजा रवि वर्मा, अबनीन्द्रनाथ टैगोर, अम ता शेरगिल, रबीन्द्रनाथ टैगोर** तथा **जैमिनी राय** समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार हैं। ये युवा कलाकार पाश्चात्य कला के आन्दोलनों से बखूबी परिचित थे। जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद तथा अतियथार्थवाद ने इन युवा कलाकारों की कला पर बहुत प्रभाव छोड़ा। परन्तु साथ ही अपनी भारतीय पहचान बनाए रखने का उनका प्रयास चलता रहा। इस स्तर पर पाश्चात्य तकनीक तथा भारतीय आध्यात्मवाद का मिलन भारतीय कला का मूल भाव रहा। पाश्चात्य विधियाँ तथा सामग्री के प्रयोग के साथ–साथ उन्होंने भारतीय (पूर्वी) तरीकों के प्रयोग का प्रयास जारी रखा। लकड़ी पर कारीगरी, अश्वमुद्र तथा अम्ललेखन पर काफी प्रयोग किए गए। कोलकाता ग्रुप के कलाकार जैसे कि **प्रदोषदास गुप्त, प्राणकिशनपाल, निरोद मजूमदार, परितोषसैन** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने 1943 में अपनी पहली प्रदर्शनी लगाई। तदोपरान्त 1947 में बम्बई (अब मुंबई) के प्रगतिशील कलाकार जैसे कि **एफ.एन.सौजा, रज़ा, एम.एफ. हुसैन, के.एच. अरा** आदि ने अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। एक तरफ कुछ कलाकार पाश्चात्य शैली के साथ कुछ प्रयोग कर रहे थे और दूसरी ओर कुछ कलाकार जैसे कि **बिनोद बिहारी मुखर्जी, राम किन्कर वैज, सैलोज मुखर्जी** जापानी कला तथा लोक कला की ओर अपना रुझान दिखला रहे थे। बंगाल विचारधारा के दो कलाकारों– **देवी प्रसाद राय चौधरी** तथा **सरोदा उकिल** ने भारत के उत्तर तथा दक्षिणी भागों में आधुनिक कला आंदोलन को शुरु करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य **के.सी.एस. पनिकर** तथा **श्रीनिवासलु** ने समकालीन कला में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- भारत के प्रमुख कला आन्दोलनों के योगदान के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- समकालीन कला के विकास में प्रमुख योगदान करने वाले कलाकारों का नाम गिना सकेंगे;

व:र्लपूल

- समकालीन कलाकारों द्वारा प्रयुक्त सामान तथा तरीकों के विषय में बता सकेंगे;
- समकालीन कलाकारों में कुछ प्रमुख कलाकारों को पहचान सकेंगे; और
- सूचीकृत समकालीन कलाकारों के बारे में संक्षेप में लिख सकेंगे।

9.1 व:र्लपूल (Whirlpool)

शीर्षक	:	व:र्लपूल (Whirlpool)
कलाकार	:	कृष्णा रेड्डी
समय	:	1962
आकार	:	37.5 से.मी. x 49.5 से.मी.
माध्यम	:	कागज पर उत्कीर्ण आकृति (Intaglio on paper)

सामान्य विवरण

चित्र मुद्रण (Print making) बहुत लोकप्रिय कला है जिसे पाश्चात्य कलाकार कई शताब्दियों से प्रयोग करते रहे हैं। भारतीय कलाकारों ने चित्र मुद्रण में 19वीं शती के अन्त से ध्यान देना तथा रुचि दिखलाना शुरू किया। बहुत–से भारतीय कलाकारों ने अम्ल लेखन (Etching) ड्राइ प्वाइंट, ताम्रपत्र उत्कीर्णन, कागजपर उत्कीर्ण आकृति, लीथोग्राफी, लीओग्राफी dry point, aquatint, intaglio, lethography, liography का प्रयोग अपने चित्रों में किया है। मुद्रण (Print making) का मुख्य लाभ यह है कि किसी भी चित्र की कितनी भी प्रतिलिपियां उपलब्ध हो सकती हैं। **राजा रवि वर्मा** के चित्रों की लोकप्रियता का कारण यही था कि उन्होंने रंगीन शिलामुद्र (Oliography) तकनीक से अपने चित्रों की बहुत–सी प्रतियाँ उपलब्ध कर ली।

कृष्णा रेड्डी अपने समय के सबसे अधिक प्रसिद्ध चित्र मुद्रक (print maker) माने जाते हैं। वह कलाभवन, विश्वभारती तथा शान्तिनिकेतन के विद्यार्थी रहे थे।

व:र्लपूल (भंवर) कृष्णा रेड्डी की सबसे प्रसिद्ध कृति है। इसे उत्कीर्ण (intaglio) पद्धति से बनाया गया है। यह उभार पद्धति के एकदम विपरीत है क्योंकि प्लेट का धरातल स्वयं प्रिंट नहीं करता क्योंकि खुदे हुए हिस्सों में स्याही भर जाती है। चित्र की रूपरेखा तांबे या जस्ता (zink) की प्लेट पर रेखाओं के रूप में उभारी जाती है। इस पर स्याही का प्रयोग होता है और उसके बाद उसे किसी कठोर पदार्थ से खुरच दिया जाता है। एक गीले कागज को उस प्लेट पर डालकर मशीन से दबाया जाता है जिससे उसकी आकृति उभर आती है। **व:र्लपूल** (Whirlpool) नामक चित्र में चित्रकार ने परिचित वस्तुओं के नए आकार बनाए हैं, जो बाद में अमूर्त रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इस चित्र में कलाकार का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के प्रभाव को चित्रित करना था। चित्र के अनुसार सभी कुछ अन्तरिक्षीय भंवर में खो जाते हैं। इस चित्र में वस्तुओं का प्रतिबिम्ब साद श्यमूलक नहीं है यद्यपि कुछ प्रतिबिम्बों जैसे सितारे, फूल तथा बादलों को स्पष्ट रूप से पहचाना जाना मुश्किल है। **कृष्ण रेड्डी** के मूर्तिकला के क्षेत्र के पूर्व अनुभव से उभार किस्म उत्कीर्ण की आकृति के अर्थ एवं प्रभाव को समझने में सहायता मिली है, जो उनकी कलाकृति का सौन्दर्य है।

पाठगत प्रश्न 9.1

1. कलाकारों द्वारा प्रयुक्त मुद्रण तकनीक के बारे में लिखिए।

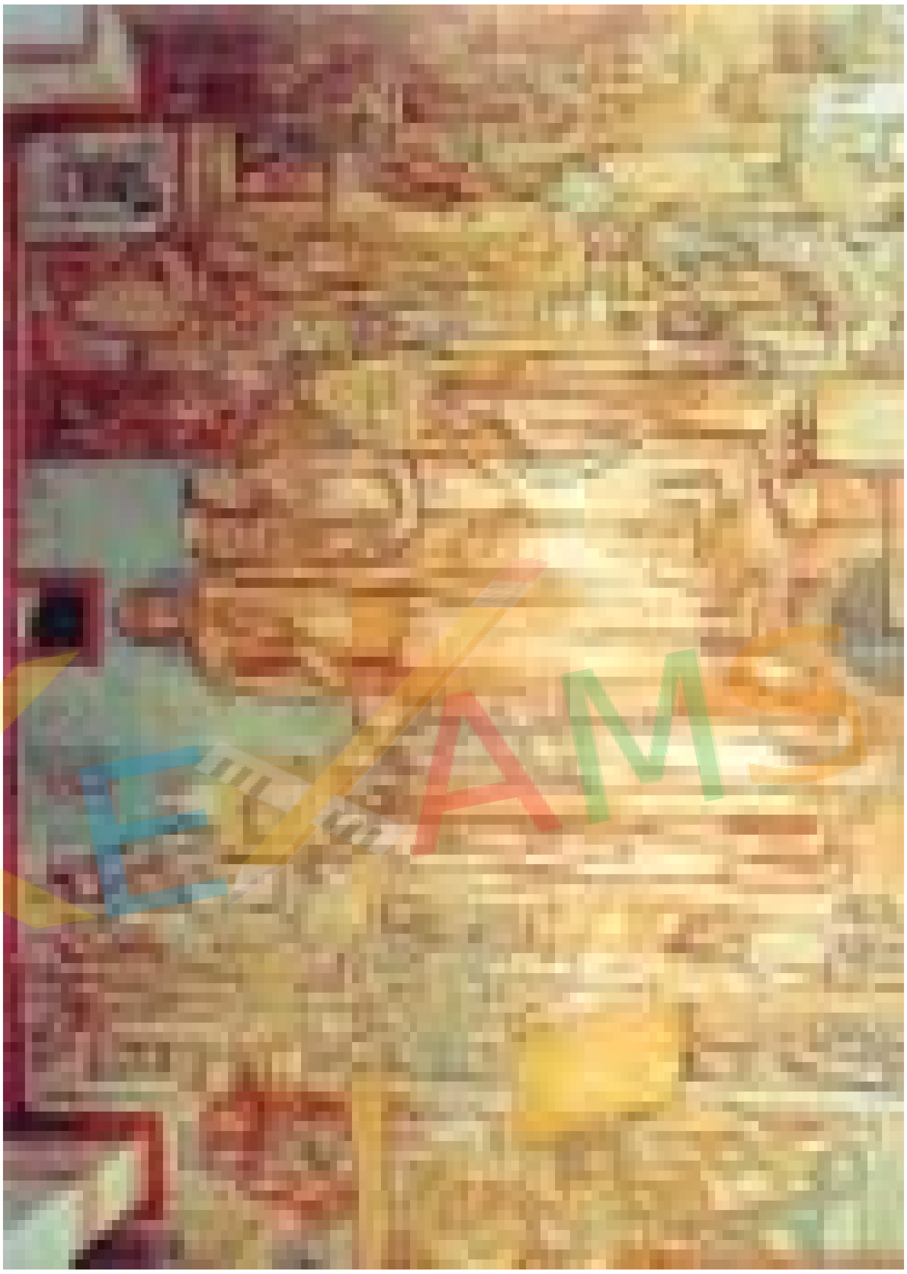

मैडीवल सेन्ट्स

2. **कृष्णा रेड्डी** ने **व:र्लपूल** (Whirlpool) नामक चित्र में किस मुद्रण तकनीक को अपनाया है?

3. **कृष्णा रेड्डी** के चित्र **व:र्लपूल** (Whirlpool) के बारे में क्या जानते हैं? दो लाइन में लिखिए।

9.2 मैडीवल सेन्टस् (Medieval saints)

शीर्षक : मैडीवल सेन्ट्स
कलाकार : विनोद बिहारी मुखर्जी (1904–1980)
समय : 1947
संकलन : शान्तिनिकेतन विश्व भारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्तिचित्र।
माध्यम : ''भित्तिचित्र

सामान्य विवरण

विनोद बिहारी मुखर्जी प्रसिद्ध बंगाल स्कूल के चित्रकार **नन्दलाल बोस** के शिष्य थे। वह प्रकृति के सौन्दर्य को बहुत प्यार करते थे और उन्होंने अपने चित्रों को उसी सौन्दर्य पर आधारित किया। उन्होंने प्राकृतिक द श्यों को चित्रित करना जापान से सीखा। उन्होंने जापानी कलाकारों की भांति सरल तथा विवेकपूर्ण तरीके से रेखाएं खींची हैं। इन रेखाओं में सुलेख के गुण मौजूद हैं। **बिनोद बिहारी** की आँखें बचपन से ही कमजोर थीं और जीवन के अन्तिम चरण में वह अन्धे हो गए थे परन्तु न तो युवाकाल में आँखों की कमजोरी और न ही जीवन के अन्तिम चरण में हुआ अन्धापन उनकी सर्जनात्मक शक्ति को प्रभावित कर सका।

सारे जीवन वह विभिन्न माध्यमों के साथ प्रयोग करते रहे। अपने अन्धेपन के बावजूद उन्होंने शान्तिनिकेतन के कला भवन की दीवार पर भित्तिचित्र बनाया।

दि मैडीवल सेन्ट्स (The Medieval Saints) नामक भित्तिचित्र विनोद बिहारी मुखर्जी के द्वारा हिन्दी भवन की दीवार पर बनाया गया है जिसमें **भित्तिचित्र** (Fresco Buono) तकनीक का प्रयोग किया गया। यह दीवार पर बनाए जाने वाले (भित्तिचित्रों) को बनाने की एक पद्धति है जिसमें रंगों की पिगमैन्ट्स को पानी में मिलाया जाता है, ताकि चूने के प्लास्टर के आधार को गीला किया जा सके। इस पद्धति में रंग दीवार का एक अंश बन जाता है जिस कारण उस रंग का स्थायित्व बढ़ जाता है।

दि मैडीवल सेन्ट्स (The Medieval Saints) एक भित्तिचित्र है जिसमें भारत के विभिन्न धर्मों के सन्तों को दिखलाया (चित्रित किया) गया है। दीवार के आकार के अनुसार ही इस भित्तिचित्र को बनाया गया है। चित्र का संयोजन दीवार के आकार एवं आकृति के अनुसार ही किया गया है। लंबी होती मानवीय आकृतियाँ एक बहती नदी की गति की तरह लय और ताल में दिखाई देती हैं। इन मानवीय विशेषताओं वाली आकृतियों को देखकर **ग्रोथिक चर्च** की दीवार पर बनी हुई मूर्तिकला की याद आती है। चित्र में लम्बी आकृतियों की ऊर्ध्वता को प्रभावी तरीके से दिखाया गया है। छोटी आकृतियों को समतल स्तर पर दिखाकर इन आकृतियों का संतुलन दिखाया गया है। आकृतियों की लम्बाई उनकी आध्यात्मिक महानता की द्योतक है। इसी प्रकार छोटी आकृतियाँ प्रतिदिन के

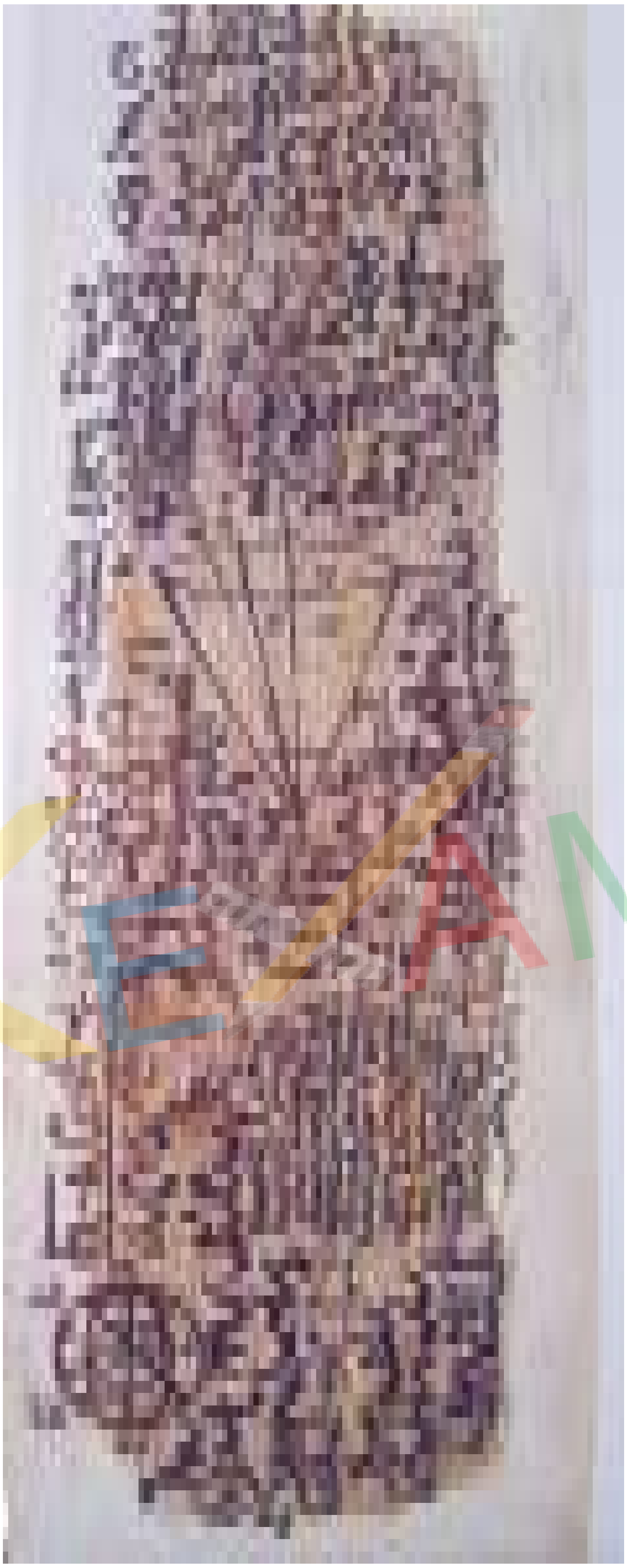

वर्ड्स एंड सिंबल्स

क्रिया–कलापों में व्यस्त आमलोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस चित्र में रेखाएं प्रभावशाली प्रतीत होती हैं परन्तु रंगों का प्रयोग सीमित रूप में किया गया है। मुख्यतः भूरे, पीले, गेरुए तथा मिट्टी के रंगों को प्रयोग में लाया गया है।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. **विनोद बिहारी** के अध्यापक तथा उनके शिक्षा के स्थानों के बारे में लिखिए।
2. **भित्तिचित्र** (Fresco Buono) तकनीक के बारे में दो पंक्तियाँ लिखिए।
3. **मैडीवल सेन्ट्स** (Medieval Saints) नामक भित्तिचित्र में किन रंगों का प्रयोग किया गया है?
4. **विनोद बिहारी** की शारीरिक समस्याएँ क्या थीं?

9.3 वर्ड्स एंड सिंबल्स (Words and symbols)

शीर्षक	:	वर्ड्स एंड सिंबल्स
कलाकार	:	के.सी.एस. पनिकर (1911 - 1977)
माध्यम	:	लकड़ी के बोर्ड पर तैलीय रंग
आकार	:	43 से.मी. x 124 से.मी.
समय	:	1965

सामान्य विवरण

दक्षिण भारत में समकालीन कला के आन्दोलन के प्रणेता के रूप में **के.सी.एस. पनिकर** को जाना जाता है। वे मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में बंगाल विचारधारा के गुरु **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य थे।

उन्हें अपने जीवन यापन के लिए बहुत–से विषम कार्य करने पड़े। उन्होंने एक कलाकार के रूप में स्थापित होने से पूर्व टैलीग्राफ ऑपरेटर तथा बीमा के एजेन्ट के रूप में काम किया। उनकी शैली में काफी परिवर्तन देखे गए। वे यथार्थवाद से प्रारम्भ करके ज्यामितीय शैली तक पहुंचे। उन्होंने एक अध्यापक के रूप में बहुत–से दक्षिण के कलाकारों को प्रशिक्षित एवं प्रोत्साहित किया। उन्होंने चेन्नई के पास 'चोला मण्डलम' नामक भारत के प्रथम कला–ग्राम की स्थापना की।

प्रस्तुत चित्र उनकी चित्र श्रृंखला **'शब्द और प्रतीक'** से लिया गया एक प्रसिद्ध चित्र है। यह अपने में बिल्कुल भिन्न प्रकार का प्रयोगात्मक कार्य है, जिसमें सुलेख से स्थान को भरा गया है। **पनिकर** ने गणित के चिह्नों, अरबी आकृतियों तथा रोमन एवं मलयालम लिपि के प्रयोग से ऐसी आकृति पैदा की है जो देखने में जन्म पत्रिका जैसी लगती है। तान्त्रिक प्रतीकात्मक रेखा–लेखों का प्रयोग भी किया गया है। इन चित्रों में रंगों का प्रयोग नाम मात्र के लिए है।

लेंडस्केप इन रेड

पाठगत प्रश्न 9.3

1. दक्षिण भारत कला क्षेत्र में **के.सी.एस. पनिकर** का क्या योगदान है?
2. **'चोला मण्डलम'** क्या है? उसका पनिकर के साथ क्या सम्बन्ध है?
3. **पनिकर** के सूचीकृत चित्रों पर दो पंक्तियाँ लिखिए।

9.4 लैंडस्केप इन रेड Landscape in Red

शीर्षक	:	लेंडस्केप इन रेड
कलाकार	:	फ्रेंसिस न्यूटन सौज़ा (1924-2002)
समय	:	1961
आकार	:	78.7 से.मी. x 132.1 से.मी.
माध्यम	:	तैलीय रंग
संकलन	:	जहांगीर निकलसन संग्रहालय

सामान्य विवरण

एफ.एन. सौज़ा का जन्म गोवा में हुआ था तथा उनका लालन–पालन मुम्बई में हुआ। उन्हें स्कूल से निष्कासित कर दिया गया था। तब उन्होंने जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। उन्हें 1945 में वहाँ से भी निष्कासित कर दिया गया। 1947 में प्रगतिशील कलाकारों के एक ग्रुप की स्थापना करने वाले वह सबसे युवा चित्रकार थे। बाद में उन्होंने भारत छोड़ दिया तथा लंदन में रहने लगे। बाद में वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने जाने वाले पांच कलाकारों में से एक थे। उनके निम्न मध्यवर्गीय प ष्ठभूमि के कारण तथा आर्थिक समस्याओं के कारण वह समाज के प्रति बागी हो गए। अपने चित्रों के माध्यम से उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। अपने अन्य समकालीन कलाकारों की भांति उन पर उत्तर प्रभाववादी तथा जर्मन अभिव्यक्तिवादी चित्रकारों का प्रभाव पड़ा और वह उन विचारधाराओं से प्रभावित एवं प्रोत्साहित हुए। विशेष रूप से वह **पिकासो** तथा **मतीसे** से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी निजी शैली की खोज की जिसमें भारतीय मंदिर मूर्तिकला और पाश्चात्य शैली का मिश्रण था। सुज़ा कला के सभी स्वरूपों पर अनवरत रूप से प्रयोगात्मक कार्य करने वाले चित्रकार थे।

सौज़ा का विशेष प्रेम प्राकृतिक के द श्यों के चित्रण में था। उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक विचारों को भी अपने चित्रों में स्थान दिया। **लेंडस्केप इन रेड** (Landscape in Red) का उनकी प्राकृतिक चित्रण वाली कृतियों में विशेष स्थान है। यह एक प्रयोगात्मक शहरी द श्य का चित्र है। चित्रकार ने शहर जैसा रूप दिखाने की कोशिश की है जो सिवाय जंगल के कुछ भी नहीं है। उनके शहरी प्रकृति चित्रों में शहरों की

रहस्यमय प्रकृति का चित्रण होता है। सुलेखीय रूप में रेखाओं को रंगों के साथ बड़े अच्छे तरीके से संयोजित किया गया है। इस संयोजन में रंग तथा आकार अलग से उभरते हैं। इस चित्र में मुख्य रूप से लाल रंग का प्रयोग किया गया है तथापि इधर–उधर हरे रंग के छींटे भी डाले गए हैं। किसी भी परिद श्य का नियम नहीं माना गया है तथापि स्थान की गहराई चित्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

सुज़ा ने अपने कार्यकाल में विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए। एक यूरोपीय कला समीक्षक ने उनकी तुलना पिकासो से की है।

पाठगत प्रश्न 9.4

1. 'प्रगतिशील कलाकारों के ग्रुप' के प्रर्वतकों में किसी एक का नाम बताइए।
2. **सौज़ा** के **'द लेंडस्कप इन रेड'** की कुछ मुख्य विशेषताएं बताइए।
3. **सौज़ा** की कला को किसने प्रेरणा दी?
4. **सौज़ा** विदेश में किन शहरों में रहे?

आपने क्या सीखा

भारत के कई महानगरों में भारत की समकालीन कला का प्रारम्भ **राजा रवि वर्मा** तथा बंगाल स्कूल के साथ हुआ। यद्यपि बंगाल स्कूल ने भारत की प्राचीन परम्परावादी कला को जीवित करने का पूर्ण प्रयास किया तथापि पाश्चात्य कला का प्रभाव युवा कलाकारों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। भारतीय कला को एक अर्थ देने के उद्देश्य से 30–40 वर्षीय इन युवा कलाकारों ने या तो पश्चिम से प्रेरणा ली या सुदूर पूर्व से। इनमें से कुछ कलाकार पश्चिमी देशों में चले गए और अन्त में वहीं रहने लगे। जो कलाकार यहाँ भारत में ही रह गए, वे अपनी पहचान खोजने में ही संघर्ष करते रहे। यह संतोष का विषय है कि कुछ कलाकारों को अपनी उचित पहचान मिल गई तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने को सफल कलाकारों के रूप में प्रस्थापित कर सके।

पाठांत अभ्यास

1. भारत की समकालीन कला के विकास में सहायक प्रभावी तत्वों का विवरण दीजिए।
2. उन दो भारतीय चित्रकारों के बारे में लिखिए जो विदेश गए तथा वहीं रहने लगे और जिन्होंने प्रसिद्धि भी प्राप्त की।

3. उस भारतीय कलाकार के बारे में लिखिए जो अन्धा हो गया था?

4. सौज़ा चित्रकार के विषय में संक्षेप में लिखिए।

5. पनिकर के एक प्रसिद्ध चित्र का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.2

1. बंगाल स्कूल के कलाकार **नन्दलाल बोस** उनके अध्यापक थे।

2. यह एक तरीका है जिसमें रंगों के पाउडर के रूप में पिगमैन्ट्स को पानी में मिलाया जाता है और उसे ताज़ा चूने के प्लास्टर पर लगाया जाता है।

3. भूरा, पीला, गेरुआ तथा प थ्वी का रंग

4. उनकी आंखें बहुत कमजोर थीं तथा बाद में वह अन्धे हो गए।

9.3

1. वह दक्षिण में समकालीन कला के विकास में अग्रणी तथा प्रभावशाली कलाकार थे।

2. उन्होंने चेन्नई के निकट **'चोला मण्डलम'** नामक भारत के प्रथम कला–ग्राम की स्थापना।

3. **वर्ड्स एंड सिम्बल्स** एक ऐसा प्रयोग है जिसमें सुलेख द्वारा स्थान को भरा गया।

9.4

1. **एफ.एन. सौज़ा**

2. प्रयोगात्मक शहरी प्रकृति चित्र जो संसार का रहस्यात्मक पक्ष प्रस्तुत करता है तथा जिसमें सुलेख तथा कोई परम्परावादी परिद श्य नहीं है।

3. **पिकासो** तथा **मतीसे**

4. लन्दन तथा न्यूयोर्क